P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

पोलियो प्रतिरक्षण अभियान के प्रति ग्रामीणों की जागरूकता व सहभागिता का समाजशास्त्रीय अध्ययन

कृष्णा अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय,
अलीगढ़, (यू0पी0) भारत

सारांश

पोलियो विषाणु से उत्पन्न होने वाला भीषण सक्रामक रोग है जो पांच वर्ष तक के बच्चों को जल्दी अपनी चपेट में ले लेता है और उन्हें जीवन भर के लिए अपंग बना देता है। बीसवीं सदी में यह बाल्यावस्था की सबसे भयानक बीमारी के रूप में उभरी जिसके कारण यूरोप व अमेरिका के साथ–साथ भारत सहित अनेक देश इसकी चपेट में आते चले गए। जोनास सॉल्क व अल्बर्ट साबिन द्वारा विकसित टीके ने वैश्विक स्तर पर पोलियो उन्मूलन में मदद की। 1988 में वैश्विक पोलियो उन्मूलन के लिए पहल की शुरूआत हुई और भारत ने विश्व स्वास्थ्य संगठन के 192 सदस्य देशों के साथ पोलियो उन्मूलन का संकल्प लिया जिसके परिणामस्वरूप 2014 में भारत को पोलियोमुक्त देश घोषित किया जा चुका है। हालांकि पाकिस्तान, अफगानिस्तान व नाइजीरिया जहां पोलियो के विषाणु अभी भी मौजूद है, से भारत की नजदीकी होने के कारण पोलियो का खतरा अभी खत्म नहीं हुआ है। प्रस्तुत शोध–पत्र अलीगढ़ के 50 ग्रामीण परिवारों से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एकत्रित की गई सूचनाओं के वर्गीकरण, सारणीयन व विश्लेषण पर आधारित है और यह स्पष्ट करता है कि गांव के लोग भी पोलियो व उसके टीकाकरण के प्रति काफी जागरूक हैं।

मुख्य शब्द : पोलियो प्रतिरक्षण अभियान, पोलियो विषाणु।

प्रस्तावना

पोलियोमेलाइटिस (संक्षेप में पोलियो) विषाणु से उत्पन्न होने वाला भीषण संक्रामक रोग है। इस रोग को शिशु पक्षाघात भी कहा जाता है क्योंकि यह रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने के कारण 5 वर्ष तक के बच्चों को जल्दी अपनी चपेट में ले लेता है और उन्हें जीवन भर के लिए अपंग बना देता है। यह रोग आमतौर पर एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में संक्रमित विष्ठा, भोजन, व जल के माध्यम से फैलता है। उन्नीसवीं सदी से पहले लोग पोलियो को एक महामारी के रूप में नहीं जानते थे लेकिन बीसवीं सदी में यह बाल्यावस्था की सबसे भयानक बीमारी के रूप में उभरी जिसने पहले यूरोप व अमेरिका के हजारों बच्चों को अपंग बना दिया और इसके बाद भारत सहित दुनिया के अधिकांश देश इस की चपेट में आते चले गए। शुद्ध व सुरक्षित पानी, उचित साफ–सफाई और टीकाकरण इस रोग की रोकथाम के लिए आवश्यक है।

इस रोग की भयावहता ने इस के बचाव के लिए टीका विकसित करने की प्रेरणा दी। 1952 में जोनास सौल्क द्वारा विकसित टीका आई.पी.वी. तथा 1962 में अल्वर्ट साविन द्वारा विकसित टीका ओ.पी.वी. ने वैश्विक स्तर पर पोलियो उन्मूलन में मदद की। विश्व स्वास्थ्य संगठन व यूनिसेफ द्वारा की गई पहल में रोटरी इन्टरनेशनल, बिल एवं मेलिन्डागेट्स फाउन्डेशन के सहयोग से टीकाकरण के लिए किए गए प्रयासों से पोलियो का वैश्विक उन्मूलन का सपना सच हो सकता है।

बच्चे किसी भी देश का भविष्य होते हैं इसलिए भारत जैसे ग्राम प्रधान देश में बच्चों को विभिन्न खतरनाक बीमारियों से बचाव के लिए टीकाकरण अभियान चलाया जा रहा हैं। 1985 में भारत में पोलियों के करीब डेढ़ लाख मामले सामने आए। 1988 में वैश्विक पोलियो उन्मूलन के लिए पहल की शुरूआत हुई। इस पहल की मुख्य रणनीति थी– सभी का टीकाकरण और पोलियो के नये मामलों पर सावधानीपूर्वक नजर रखना। 1988 में ही भारत ने विश्व स्वास्थ्य संगठन के 192 सदस्य देशों के साथ वैश्विक पोलियो उन्मूलन का संकल्प लिया।

1995 में भारत में 'पल्स पोलियो अभियान' के अन्तर्गत 'राष्ट्रीय प्रतिरक्षण दिवस' के रूप में पोलियो प्रतिरक्षण की नीति बनाई गई जिसमें

नियमित टीकाकरण के अतिरिक्त सरकार द्वारा अलग–अलग दिवसों में पोलियोबूथों के माध्यम से तथा स्वास्थ्यकर्मियों द्वारा घर–घर जाकर, व सार्वजनिक स्थानों पर पोलियो की दवा पिलाई जाने लगी जिसके परिणामस्वरूप 1988 से 2001 तक भारत में पोलियो के मामलों में बड़ी कमी आई परन्तु 2002 तथा 2006 से 2009 तक पोलियो के मामलों में फिर वृद्धि हुई। 2009 में 741 केस तथा 2010 में पोलियों के केवल 42 केस दर्ज हुए। 2011 में भारत में डब्ल्यू. पी. वी. टाइप 1 का केवल एक केस 13 जनवरी 2011 को हावड़ा, (पश्चिम बंगाल) में दर्ज किया गया। डब्ल्यू. पी.वी. टाइप 2 का आखिरी मामला अक्टूबर 1999 में अलीगढ़ उत्तर प्रदेश में दर्ज हुआ जबकि डब्ल्यू. पी.वी. टाइप 3 का आखिरी मामला 22 अक्टूबर 2010 को पाकुर (झारखण्ड) में सामने आया। इसके बाद लगातार तीन साल तक पोलियो का कोई मामला सामने नहीं आया इसलिए भारत को 2014 में पोलियो मुक्त घोषित कर दिया गया है। चूंकि पाकिस्तान, अफगानिस्तान व नाइजीरिया में पोलियो के विषाणु अभी भी मौजूद हैं और भारत से इन देशों की काफी नजदीकी है इसलिए पोलियो का खतरा खत्म नहीं हुआ है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण परिवारों में पोलियो के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. पोलियो प्रतिरक्षण अभियान में ग्रामीणों की सहभागिता का अध्ययन करना।
3. टीकाकरण की स्थिति व टीकाकरण से वंचित रहने के कारणों को ज्ञात करना।
4. पल्स पोलियो अभियान के वारे में जानकारी देने वाले श्रोतों का पता लगाना।

अध्ययन पद्धति

पोलियो प्रतिरक्षण अभियान में ग्रामीणों की जागरूकता व सहभागिता का अध्ययन करने के लिए उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जनपद को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चुना गया। अलीगढ़ जनपद के निकटतम् गांव पनैठी व मुकन्दपुर में रहने वाले 50 उन परिवारों को उद्देश्यपरक निदर्शन के आधार पर चुना गया जिनमें 0–5 वर्ष तक के बच्चे थे। इन परिवारों में बच्चों के मातापिता से सूचनादाता के रूप में साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से सूचनाएँ एकत्रित की गई। एकत्रित तथ्यों का वर्गीकरण और सारणीयन के बाद विश्लेषण किया गया।

तथ्यों का सारणीयन व विश्लेषण

तालिका नं0 1 : पोलियो के बारे में जानकारी का स्तर

जानकारी से सम्बन्धित प्रश्न		सूचनादाताओं का प्रत्युत्तर					
		हां		नहीं		कुल योग	
		सं0	%	सं0	%	सं0	%
1	क्या पोलियो एक संक्रामक बीमारी है?	10	20	40	80	50	100
2	क्या पोलियो एक लाइलाज बीमारी है?	38	76	12	24	50	100
3	क्या पोलियो से बच्चा अपंग हो जाता है?	47	94	3	6	50	100
4	क्या दूषित पानी, भोजन व गन्दगी से पोलियो फैलता है?	5	10	45	90	50	100
5	क्या टीकाकरण द्वारा पोलियो से बचाव सम्भव है?	42	84	8	16	50	100
6	क्या हर बार पोलियो की दवा पिलाना जरूरी समझते हैं ?	31	62	19	38	50	100

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि केवल 20 प्रतिशत सूचनादाता यह जानते हैं कि पोलियो एक सक्रांमक बीमारी है जबकि 80% सूचनादाता यह नहीं जानते कि पोलियो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक फैल सकता है। यद्यपि 76% सूचनादाता यह जानते है कि पोलियो एक लाइलाज बीमारी है। 94% सूचनादाताओं को यह मालूम है कि पोलियो होने पर बच्चे के पैर खराब हो जाते हैं और बच्चा जीवन भर के लिए अपंग हो जाता है। केवल 10% सूचनादाता यह जानते है कि पोलियो के फैलने कारण दूषित पानी, भोजन व गन्दगी भी है। 84% सूचनादाता यह जानते हैं कि टीकाकरण द्वारा पोलियो से बच्चे को बचाया जा सकता है परन्तु 62% सूचनादाता पोलियो की दवा बार–बार पिलाया जाना जरूरी नहीं मानते है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि अधिकांश ग्रामीणों को यह नहीं मालूम कि पोलियो एक सक्रांमक बीमारी है और इसके फैलनेका कारण दूषित पानी, भोजन व गन्दगी है 'जबकि पोलियो से बचाव के लिए टीकाकरण के बारे में अधिकांश ग्रामीण जागरूक हैं।

तलिका नं0 2 : टीकाकरण की स्थिति

टीकाकरण की स्थिति		सूचनादाताओं का प्रत्युत्तर					
		हां		नहीं		कुल योग	
		सं0	%	सं0	%	सं0	%
1	नियमित टीकाकरण की स्थिति						
A	प्राथमिक खुराक (0–2 वर्ष आयु)	43	86	7	14	50	100
B	बूस्टर खुराक (2–5 वर्ष आयु)	21	42	29	58	50	100
2	पल्स पोलियो अभियान के अन्तर्गत प्रत्येक खुराक	31	62	19	38	50	100

उपर्युक्त तालिका नियमित टीकाकरण व पल्स पोलियो अभियान में ग्रामीणों की भागीदारी को दर्शाती है। 86% सूचनादाताओं ने स्वीकार किया कि उन्होंने अपने बच्चों को जन्म के बाद पोलियो व अन्य जानलेवा बीमारियों से बचाव के लिए नियमित रूप से टीके लगवाए हैं और पोलियो की प्राथमिक खुराक भी दी है जब कि 2 से 5 वर्ष तक के बच्चों के लिए बूस्टर खुराक केवल 42% परिवारों में दी गई है। नियमित टीकाकरण के अतिरिक्त पल्स पोलियो अभियान के प्रत्येक राउन्ड में 42% सूचनादाताओं ने अपने बच्चों का घर पर ही या पोलियो बूथ पर जाकर पोलियो की दवा पिलाई है जबकि 38% सूचनादाताओं ने कभी–कभी ही पोलियो की दवा पिलाई है। ऐसा कोई सूचनादाता नहीं था जिसने अपने बच्चों को पोलियों की दवा एक बार भी न पिलाई हो। यह स्वास्थ्यकर्मियों या स्वयं–सेवकों द्वारा घर–घर जाकर व सार्वजनिक स्थानों पर दवा पिलाए जाने के कारण संभव हो सका।

तलिका नं0 3 : टीकाकरण से वंचित रहने का कारण

कारण		सूचनादाताओं का प्रत्युत्तर	
		सं0	%
1	समय की कमी	7	14
2	बच्चे का बीमार होना	10	20
3	विपरीत प्रभाव / नुकसान का डर	13	26
4	जरूरी नहीं समझा	19	38
5	याद नहीं रहा	01	02
	कुल योग	50	100

उपर्युक्त तालिका उन परिस्थितियों को स्पष्ट करती है जिसके कारण कुछ परिवारों में बच्चों को नियमित टीकाकरण या पल्सपोलियो अभियान के प्रत्येक राउन्ड में पोलियो की दवा पिलाना संभव नहीं हो सका। इसका प्रमुख कारण है कि 38% ग्रामीणों ने हर बार दवा पिलाना आवश्यक नहीं समझा। क्योंकि कुछ ग्रामीणों को आंशका थी कि पोलियो की दवा पीने के बाद भी पोलियो होने की संभावना रहती है। 26% ग्रामीणों ने बार–बार दवा पिलाने से होने वाले नुकसान या विपरीत प्रभाव की आशंका से और 20% लोगों ने बच्चे के बीमार होने की दशा में पोलियो की दवा हर बार नहीं पिलाई। 14% ग्रामीण समय की कमी के कारण व 2% ग्रामीण उत्सव या त्योहार के कारण याद न रहने पर दवा पिलाने से चूक गए।

तलिका नं0 4 :पोलियो टीकाकरण की जानकारी का श्रोत

जानकारी का श्रोत		सूचनादाताओं का प्रत्युत्तर	
		सं0	%
1	पड़ौसी/मित्र / रिश्तेदार	27	54
2	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र / स्वास्थ्य कर्मी	13	26
3	मीडिया (समाचार – पत्र, टी0वी0 आदि)	05	10
4	स्वयं सेवी कार्यकर्ता	05	10
	कुल योग	50	100

उपर्युक्त तालिका यह दर्शाती है कि ग्रामीणों को पोलियो टीकाकरण की जानकारी व प्रेरणा कहाँ से मिली। 54% ग्रामीणों को अपने पड़ोसी, मित्र या रिश्तेदार से बातचीत के दौरान पोलियो की दवा पिलाए जाने के दिन समय व स्थान की जानकारी मिली। 26% ग्रामीणों को स्वास्थ्य केन्द्र द्वारा या स्वास्थ्यकर्मियों से और 10% लोगों को यह जानकारी समाचार–पत्र, टी.वी. आदि के माध्यम से हुई। स्वयंसेवी कार्यकताओं की भूमिका ग्रामीणों को जानकारी प्रदान करने व टीकाकरण के लिए प्रेरित करने में काफी कम अर्थात 10% रही।

निष्कर्ष

उपर्युक्त तालिकाओं और तथ्यों के विश्लेषण के पश्चात पल्स पोलियो अभियान के प्रति ग्रामीणों में जागरूकता एवं सहभागिता के बारें में महत्वपूर्ण निष्कर्ष निम्नांकित हैं–

1. अधिकांश ग्रामीणों को यह जानकारी नहीं है कि पोलियो एक संक्रामक बीमारी है और दूषित पानी, भोजन व गन्दगी से इस बीमारी के विषाणु एक बच्चे से दूसरे बच्चों तक पहुंच सकते हैं।
2. अधिकांश ग्रामीणों को यह जानकारी है कि पोलियों से बच्चा अपंग हो जाता है और इसका पूरी तरह इलाज सम्भव नहीं है।
3. अधिकांश ग्रामीण यह जानते है कि पोलियो से बचाव के लिए टीकाकरण जरूरी है किन्तु उनमें से कुछ बार–बार तथा हर राउन्ड में पोलियों की दवा पिलाना आवश्यक नहीं मानते।
4. प्राथमिक खुराक के अनुपात में बूस्टर खुराक व हर राउन्ड में पोलियो प्रतिरक्षण के लिए दवा पिलाने वाले परिवारों की संख्या कम है अर्थात् ग्रामीण परिवारों में जितना ध्यान नियमित टीकाकरण में बच्चे को पोलियों की प्राथमिक खुराक पिलाने पर दिया गया है उतना बूस्टर खुराक व पल्स पोलियो

अभियान के तहत प्रत्येक राउन्ड में दी जाने वाली खुराक पर ध्यान नहीं दिया है।

5. ग्रामीण परिवारों में बच्चों के कई बार दवा से वंचित रहने का प्रमुख कारण बार–बार दवा पिलाना आवश्यक न समझना था। इसके अतिरिक्त क्रमशः विपरीत प्रभाव व नुकसान का डर, बच्चे का बीमार होना, समय की कमी व उत्सव और त्योहार के कारण दवा पिलाना याद न रहना भी पोलियो टीकाकरण से वंचित रहने का कारण सामने आया।
6. अधिकांश ग्रामीणों को पल्स पोलियो अभियान की जानकारी व दवा पिलाने की प्रेरणा अपने पड़ौसी, मित्र या रिश्तेदार से मिली। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र / स्वास्थ्यकर्मियों, मीडिया, व पंचायत का इसमें योगदान अपेक्षाकृत कम रहा।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों का विश्लेषण करने के बाद यह बात उजागर हुई कि गांव के लोग भी पोलियो की बीमारी से होने वाली अपंगता व इसके बचाव के लिए टीकाकरण के प्रति काफी जागरूक हैं। इससे सरकार द्वारा चलाए जा रहे पल्स पोलियो अभियान की सफलता का आंकलन किया जा सकता है। पोलियो निवारण में ग्रामीणों की सन्तोषजनक सहभागिता व जनवरी 2011 के बाद अब तक एक भी पोलियो केस दर्ज न होने पर भारत को 2014 में पोलियो मुक्त घोषित किया जा चुका है। जब तक वैश्विक स्तर पर पोलियो का समूल नाश नहीं हो जाता तब तक भारत में पर्याप्त सतर्कता व निगरानी की आवश्यकता है ताकि पोलियो की वापसी न हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Helen Briggs "Polio Outbreak :Where now for Global Eradication Dribe?" BBC News website; 1 Oct 2011.

Jill Mc Givering "India on course to be declined Polio free" BBC News, 12 Jan 2012.

Lal. S., "Towards Eradication of Poliomyelitis" Indian Journal of community Medicine, 1997 XXII, No. 4, 139-144.

Subhadra Menon, "India's Battle to finish off Polio" (https://www.bbc.com/news/world-asia-india-1671) 25 Jan 2012.

Subhadra Menon "India's Battle to finish off Polio" (https://www.bbc.com/news/world-asia-india-1671) 25 Jan 2012.

Soudarssanana M. B. "Pulse Polio Immunization-Evolution of the Poliomyelitis Programme in India using the oral polio vaccine". Indian Journal of community Medicine; 1997 XXII No. 4, 178-183